

महिला, परिवार एवं राष्ट्र निर्माण की अवधारणा

अनिता गौतम* एवं डॉ. वंदना राठी²

¹शोधार्थी, महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

²सहायक आचार्य, महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: gautamanita141@gmail.com

Citation: गौतम, अनिता एवं राठी, वंदना (2026). महिला, परिवार एवं राष्ट्र निर्माण की अवधारणा. *Journal of Modern Management & Entrepreneurship*, 16(03), 273-276. <https://doi.org/10.62823/JMME/16.03.9551>

ABSTRACT

राष्ट्र निर्माण में नारी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रतिकूल रहा है। नारी ने हर युग में समाज के विकास और प्रगति में अपनी भूमिका निभाई है, वह केवल परिवार की संरक्षिका नहीं है, बल्कि समाज और राष्ट्र की संरक्षिका भी है। नारी ने शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति, कला विज्ञान और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और गुणों से लेकर देश को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नारी प्रकृति एवं ईश्वरीय जगत का अद्भुत पवित्र साध्य है जिसे अनुभव करने के लिए पवित्र साधन एवं दृष्टि होना आवश्यक है, नारी का स्वरूप विराट होता है जिसके समक्ष स्वयं विद्याता भी नतमस्तक हो जाते हैं। समाज के सांस्कृतिक, धार्मिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक जगत में नारी यानी स्त्री का दिव्य स्वरूप प्रस्फुटित हुआ है और जिसके फलस्वरूप राष्ट्र ने नई-नई ऊचाईयों को भी शिरोधार्य किया है। सभ्यता, संस्कृति, संस्कार और परंपराएँ महिलाओं के कारण ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती हैं।

शब्दकोश: संरक्षिका, नतमस्तक, प्रस्फुटित, शिरोधार्य, साझाकरण, प्रतिष्ठित, ऐतिहासिक और साहित्यिक जगत।

प्रस्तावना

महिला की अवधारणा

महिला शब्द संस्कृत के मह धातु से इलच+टोप प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ है सबके द्वारा सम्माननीय।

ऋग्वेद 10/159/2 के अनुसार – महिला का अर्थ है –

ओउम् अहं के तुरहं मूर्धा डहमुग्रा विवायनी।

ममे अनु क्रंतु पति होहनाय उपाचरेत।।

अर्थात् मैं ध्वज के समान ज्ञानवती और मैं सिर के समान प्रमुख हूँ। ऋग्वेद के इस मंत्र का अवलोकन करें तो ज्ञात होता है कि यहाँ पर महिला सशक्तिकरण पूर्ण रूप से दर्शित हो रहा है शंका की कोई आवश्यकता नहीं।

नेपोलियन ने नारी के महत्व को इस प्रकार प्रकट किया “मुझे एक योग्य माता दे दो मैं तुमको एक योग्य राष्ट्र दूंगा।” प्रोफेसर राइडर के अनुसार – “स्त्रियों ने ही सर्वप्रथम सभ्यता की नींव डाली है उन्होंने

जंगलों में मारे – मारे भटकते हुए पुरुष का हाथ पकड़ कर प्रोफेसर राइडर के अनुसार स्त्रियों ने ही सर्वप्रथम सभ्यता की नींव डाली है उन्होंने जंगलों में मारे मारे भटकते हुए पुरुष का हाथ पकड़ कर उन्हें स्थिर जीवन प्रदान किया।”

भीमराव अंबेडकर – “मैं एक समुदाय की प्रगति को उस प्रगति की डिग्री से मापता हूँ जो महिलाओं ने हासिल की है।”

परिवार की अवधारणा

परिवार रक्त संबंध या वैवाहिक संबंध से जुड़े लोगों का समूह है। यह सामाजिक व्यवस्था का आधार बनता है। आदर्श रूप से परिवार सदस्यों के परिपक्व होने के साथ – साथ पूर्वानुमान, संरचना और सुरक्षा प्रदान करते हैं। ऐतिहासिक रूप से अधिकांश मानव समाज लगाव, पालन-पोषण और समाजीकरण के प्राथमिक उद्देश्य के रूप में परिवार का उपयोग करते हैं। मानव विज्ञानी अधिकांश पारिवारिक संगठनों को मातृप्रधान, पितृप्रधान, एकल परिवार, विस्तारित परिवार के रूप में वर्गीकृत करते हैं।

परिवार के प्रारंभिक कार्यों में से एक जैविक और सामाजिक रूप से व्यक्तियों के उत्पादन और प्रजनन के लिए एक ढाँचा प्रदान करता है। यह भौतिक पदार्थों के साझाकरण, देखभाल और पालन-पोषण के आदान-प्रदान, कानूनी अधिकारों और दायित्वों, साथ ही नैतिक और भावनात्मक संबंधों के माध्यम से हो सकता है। इस प्रकार किसी व्यक्ति का अपने परिवार का अनुभव समय के साथ बदलता रहना है।

परिवार शब्द के विभिन्न परिप्रेक्ष्य हैं, बच्चों के दृष्टिकोण से, परिवार एक ‘मार्गदर्शक’ परिवार है, परिवार बच्चों को सामाजिक रूप से स्थापित करने का कार्य करता है और उनके सांस्कृतिकरण और समाजीकरण में प्रमुख भूमिका निभाता है। माता-पिता के दृष्टिकोण से, परिवार एक प्रजनन परिवार है जिसका उद्देश्य बच्चों का जन्म, सांस्कृतिकरण और समाजीकरण करना है हालांकि बच्चों का जन्म करना ही परिवार का एकमात्र कार्य नहीं है, श्रम के लैंगिक विभाजन वाले समाजों में, विवाह और दो लोगों के बीच परिणाम संबंध आर्थिक रूप से उत्पादक परिवार के गठन के लिए आवश्यक है

महिला एवं परिवार समाजीकरण

महिला एवं परिवार समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा परिवार के भीतर महिलाओं को सामाजिक मानदंडों, मूल्यों पारंपरिक भूमिकाओं और व्यवहार के तरीकों को सिखाया जाता है। यह प्रक्रिया बचपन से शुरू होती है और विवाह के बाद भी जारी रहती है, जो महिलाओं की पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक व्यवहार को निर्धारित करती है। यह उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत और पारिवारिक उत्तरदायित्व को समझने में मदद करता है।

- **मूल्य निर्माण** – महिला परिवार और समाज की धुरी है जो बच्चों के समाजीकरण और मूल्य निर्माण में प्राथमिक भूमिका निभाती है वह संस्कार, नैतिकता, सहानुभूति और संस्कृतिक विरासत की संरक्षिका होती है शिक्षित महिला न केवल परिवार के विकास, बल्कि स्वस्थ समाज के निर्माण में भी योगदान देती है। परिवार बच्चों के लिए समाजीकरण का पहला स्थान है, जहां माँ मुख्य भूमिका निभाती है। यहीं से बच्चे ईमानदारी, सम्मान और जिम्मेदारी जैसे मूलभूत मानवीय मूल्य सीखते हैं।
- **संस्कार और संस्कृति के संरक्षक** – महिलाएं नई पीढ़ी को सांस्कृतिक मानदंडों, परंपराओं और नैतिकता की शिक्षा देती हैं जो व्यक्तित्व निर्माण का आधार बनते हैं।
- **स्वास्थ्य व पोषण** – महिलाएं परिवार के जीवन स्तर को सुधरती हैं, स्वास्थ्य में सुधार लाती हैं जो सीधे समाज के विकास से जुड़ा है।
- **लैंगिक भूमिकाओं का निर्धारण** – परिवार ही वह जगह है जहां पारंपरिक रूप से लैंगिक भूमिकाओं की समझ विकसित होती है महिलाएं यहां सामाजिक व्यवहार और संबंधों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

महिला एवं राष्ट्र निर्माण

भारतीय ऋषियों ने अथर्ववेद में माताओं को 'माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:' अर्थात् भूमि अर्थात् भूमि मेरी माता है और हम इस धारा के पुत्र हैं, कहकर प्रतिष्ठित किया है, तभी से विश्व में नारी महिमा का उद्घोष हो गया था। महान शासक नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी की महत्ता को बताते हुए कहा था कि 'मुझे एक योग्य माता दे दो, मैं तुम्हें एक योग्य राष्ट्र दूंगा।' मानव कल्याण की भावना, कर्तव्य सृजनशीलता और ममता को सर्वोपरि मानते हुए महिलाओं ने इस जगत में मां के रूप में अपनी सर्वोपरि भूमिका निभाते हुए राष्ट्र निर्माण और विकास में अपने विशेष दायित्वों का निर्वहन किया है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं का महत्व इसलिए भी सर्वोपरि है कि महिलाएं बच्चों को जन्म देकर उनका पालन पोषण करते हुए उनमें संस्कार एवं सद्गुणों का उच्चतम विकास करती हैं और राष्ट्र के प्रति उनकी जिम्मेदारी को सुनिश्चित करती हैं, जिससे राष्ट्र निर्माण और विकास निर्बाध गति से होता रहे। वीर भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, विवेकानंद जैसी विभूतियों का देश हित में अवतार मां के लालन-पालन की ही देन है। जीजाबाई, जयंताबाई, पन्नाधाय जैसी अनेक माता को त्याग समर्पण और त्याग को भी इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों से अंकित किया गया है। माताएं ही हैं जो बहुआयामी व्यक्तित्व का निर्माण और विकास करती हैं।

मूलतः माताएं, स्त्रियों की राष्ट्र निर्माण की सशक्त सूत्रधार होती हैं। राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में नारी विधाता की सर्वोत्तम और उत्कृष्ट कृति है। जो जीवन की बगिया को महकाती है और मैं केवल व्यक्तिगत बल्कि राष्ट्र निर्माण एवं विकास में अपनी महती भूमिका निभाती है। नारी के लिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उनमें विविधता में एकता होती है। कैप्टन लक्ष्मी सहगल, अरुणा आसफ अली, मैडम भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, एनीबेसेंट और न जाने कितनी महिलाओं ने राष्ट्र निर्माण और विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया है। राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। विजय लक्ष्मी पंडित विश्व की प्रथम महिला जो संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनी, सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, इंदिरा गांधी जैसी महिलाओं ने राजनीतिक प्रतिभा का प्रयोग राष्ट्र निर्माण और विकास में किया है जो अपने समय के महत्वपूर्ण सशक्त हस्ताक्षर थीं।

वर्तमान में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, ममता बनर्जी, मायावती, स्मृति ईरानी, वसुंधरा राजे सिंधिया, प्रतिभा पाटिल, मृदुला सिन्हा, मैथिली ठाकुर आदि ने राजनीति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर अपने कार्यों से महिलाओं का सम्मान बढ़ाया एवं देश की अर्थव्यवस्था सुधारने में अपना योगदान दिया है।

समस्या एवं चुनौतियां

- **लैंगिक भेदभाव** – लैंगिक असमानता का तात्पर्य लिंग के आधार पर महिलाओं को पुरुषों की तुलना में दुर्बल रूप में देखने से है, लैंगिक असमानता एक बहुआयामी मुद्दा है जो वैश्विक स्तर पर चिंता का विषय बना हुआ है। महिलाओं के घर सामाज, दोहरे व्यवहार, शोषण, अपमान और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। पुरुष शिक्षा प्राप्ति एवं निर्णय, समाजीकरण, राजनीति, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रत्येक क्षेत्र में प्राथमिकता प्राप्त करते हैं परंतु महिलाएं आज भी भारतीय समाज में पराधीन हैं।
- **शिक्षा असमानता** – महिलाओं को अपनी पूर्ण क्षमता विकास के अवसर प्राप्त नहीं हो पाते इसका मुख्य कारण शिक्षा में असमानता है। जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार भारत की कुल साक्षरता दर 74.04% है जिसमें 82.14: प्रतिशत पुरुषों की एवं 65.46: महिलाओं की साक्षरता दर है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि भारत देश में महिलाओं का शैक्षिक स्तर अत्यंत ही निम्न है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में भारत की कुल साक्षरता दर 77.30: है जिसमें पुरुष साक्षरता दर 84.70: प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर 70.30: आंकलित है। पुरुष व महिलाओं की साक्षरता दर के मध्य 14.4: का वृहद अंतर भारतीय समाज में महिलाओं के निम्न शैक्षिक स्तर को दर्शाता है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी ने लिखा है कि “किसी भी देश की उन्नति का पता उस देश की महिलाओं की उन्नति से लगाया जा सकता है।” यदि एक महिला को शिक्षित किया जाए तो वह पूरे परिवार को शिक्षित बनती है

- **घरेलू हिंसा** – केवल एक थप्पड़, लेकिन नहीं मार सकता “यह वाक्य किसी फिल्म का एक मात्र एक डायलॉग ही नहीं बल्कि विभिन्न समाजों की बदरंग हकीकत को भी उजागर करता है।” ऐसा कार्य जो किसी महिला एवं बच्चे (18 वर्ष से कम आयु के बालक एवं बालिका) के स्वास्थ्य, सुरक्षा, जीवन पर संकट, आर्थिक क्षति और ऐसी क्षति जो असहनीय हो तथा जिससे महिला व बच्चों को दुख एवं अपमान सहन करना पड़े, इन सभी को घरेलू हिंसा के दायरे में शामिल किया जाता है, इस हेतु घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 संसद में पारित हुआ व मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम 2017 वन स्टॉप सेंटर जैसी योजना प्रारंभ की है।
- **आर्थिक निर्भरता** – भारतीय समाज में स्त्रियों की दयनीय दशा का एक बहुत बड़ा कारण उनका आर्थिक रूप से निर्भर न होना है। जब तक स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं हो जाती, तब तक वह अपने घर-परिवार में सशक्त रूप से हस्तक्षेप नहीं कर सकती, **सुभाष शर्मा** – “आर्थिक स्वतंत्रता आत्मनिर्भरता की एक जरूरी शर्त है अतः ऐसे अतः ऐसे प्रयास अंततः लाभदायक क्रियाकलापों तक स्त्रियों की बढ़ती पहुंच पर केंद्रित होनी चाहिए वस्तुतः स्त्रियों की परेशानियों का निदान आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता में ही निहित है।”

सुझाव

नारी की भूमिका केवल बाहरी कार्य तक सीमित नहीं है, बल्कि वह परिवार की पहली शिक्षिकाएं और संस्कार देने वाली भी हैं। एक शिक्षित महिला एक डेमोक्रेट राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। इसलिए नारी शिक्षा पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। नारी की शक्ति, समर्पण और संघर्ष से ही समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव होता है। हमें नारी की शक्तियों और सम्मान को बढ़ावा देना चाहिए, एक समृद्ध और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करना चाहिए।

उपसंहार

सशक्त महिला सशक्त समाज की आधारशिला होती है। माताएं शिशु की प्रथम शिक्षिका होती हैं माता के बाद बहन पत्नी का अवतार राष्ट्र निर्माण और विकास के साथ-साथ पथ प्रदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महिलाएं ही संस्कृति, संस्कार और परंपराओं की संरक्षिका होती हैं वे पीढ़ी दर पीढ़ी इसका संचालन, आरक्षण करती आ रही हैं, पूरे विश्व में भारत को विश्व गुरु का दर्जा दिलाने में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं महती रही है। महिलाएं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक तथा विज्ञान आदि क्षेत्रों में देश के हित के लिए अग्रणी रही हैं। सशक्त राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की सशक्त भूमिका वंदनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. <https://askfilo.Com>
2. नीरा देसाई –भारतीय नारी दशा और दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली 110002
3. <https://en.wikipedia.org>
4. <https://www.drishtias.com> घरेलू हिंसा: कारण और समाधान
5. <https://www.maitreyi.ac.in/uploads/research/Samvedna/issues/vol2/issue1/hindisection>
6. आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्त्री-जीवन
7. <https://www.malwaherald.com/thoughts/woman-who-is-the-architect-of-nation-building>
8. राष्ट्र निर्माण की सूत्रधार नारी।

